बपतिस्मा
बनाम
मसीह की सहभागिता

- साजु

मार्गम् बुक्स
पोस्ट बाक्स नं० 27,
बिलासपुर–1, छ.ग.

Baptisma
Banam
Masih ki Sahbhagita

By Saju

First Published : March, 2005
Published by : Margam Books
P. Box No. 27
Bilaspur
C'Garh - 495 001
Ph : +9425549016
Printed by : Graphic Systems & Co.
Mallappally, Ph : 2782260

For Private Circulation only

अमर आज सुबह अच्छे मूड़ में बिस्तर से उठा। उसे सब कुछ हमेशा से कुछ अलग..... बदला-बदला सा लगा। रोज की तरह आज उसका सिर नशे से भारी नहीं लग रहा था। एक नयी ताजगी सी.....। वह एक एक करके कल की घटनायें याद करने लगा।

कितनी ही बार उसने ऐसी नुक्कड़ सभाओं को देखा है। अक्सर वह इन सभाओं को अनदेखा करके निकल जाता था। मसीही परिवार में जन्म लेने के बावजूद वह सोचता था कि इस प्रकार की सभाओं को सुनना, वह भी सड़क के किनारे खड़े होकर, उसकी मान मर्यादा के खिलाफ है। पर न जाने क्यों कल उस युवक के प्रवचन को अनसुना करके निकल जाना उसे मुश्किल सा लगा। उस युवक के प्रवचन से सच्चाई टपक रही थी मानो यीशु स्वयं कह रहा हो..... तुम्हे यदि मेरी बातों का प्रमाण चाहिए तो मेरी छाती की ओर देखो...मेरे हाथों के कीलों के छेदों में हाथ डालकर देखो.....। जैसे जैसे प्रवचन के शब्द रूपी अमृत उसके कानों में गिरते गये । अमर को अहसास होता गया कि मसीही परिवार में पैदा होने के बाद भी वह प्रभु यीशु मसीह से कोसों दूर है। जब उस युवा प्रचारक ने अपने श्रोताओं को यीशु के साथ एक जीवंत रिश्ता बनाने का निमंत्रण दिया तो वह उस निमंत्रण को ठुकरा नहीं सका।

अमर को इस बात पर अधिक आश्चर्य हो रहा था कि सिर्फ एक ही दिन यीशु के साथ रहने से उसके जीवन में कितना बड़ा फर्क आ गया था। इस परिवर्तन के लिए उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उसे फिर से उस युवा प्रचारक से मिलने की इच्छा होने लगी। हो सके तो आज ही.....।

..... दफ्तर से वह सीधे उस प्रचारक की खोज में निकल पड़ा। अंततः वह उनके निवास पर पहुँचा।

'पास्टर एस.के. सिंह, फेथ होम.....।'

फेथ होम अर्थात् विश्वास भवन....। पढ़कर उसे अचरज हुआ।

वह युवा पास्टर अपने घर में ही मिल गये। काफी देर तक वे आत्मिक विषयों पर चर्चा करते रहे। अमर को मालूम था कि यीशु को स्वीकार करना उसके मसीही जीवन का आरम्भ भर ही है। इसीलिए वह मसीही जीवन के अनुभव रूपी गहराईयों में उतरना चाहता था।

अमर पास्टर के साथ पौलुस के मन परिवर्तन की कहानी पढ़ने लगा - प्रेरितों 9 अध्याय। मन परिवर्तन के बाद पौलुस के बपतिस्मा का वर्णन - (प्रेरितों 9:18) पढ़ते समय उसने बपतिस्मा के विषय अधिक जानने की इच्छा प्रगट की।

''बपतिस्मा एक ऐसा संस्कार है जो किसी व्यक्ति के मसीह के साथ सहभागिता रखने के निर्णय को दृढ़ करता है और उसे प्रमाणित भी करता है। संपूर्ण नया नियम में हम बपतिस्मा को मसीही जीवन के प्रारम्भ के प्रतीक के रूप में देखते हैं।'' पास्टर ने कहा।

क्या इसका अर्थ यह हुआ कि मसीही समाज की सदस्यता के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है? अमर ने अपना संदेह प्रगट किया।

हां यह सच है कि मसीह के साथ जीने वाले के लिए मसीही लोगों की संगति रखना अत्यधिक आवश्यक है। किन्तु बपतिस्मा के द्वारा हम किसी कलीसिया अथवा समाज की सदस्यता ग्रहण नहीं करते बल्कि यीशु मसीह की सहभागिता ग्रहण करते हैं।

वह कैसे? यीशु से पहले भी तो बपतिस्मा होता था। जैसे यूहन्ना का बपतिस्मा। वह यीशु में सहभागी होने के लिए तो नहीं था.....। क्या बपतिस्मा की स्थापना यूहन्ना ने की थी?

नहीं। इतिहास कहता है कि यीशु के दिनों में बपतिस्मा एक आम धार्मिक और सांस्कृतिक संस्कार था। उन दिनों में यदि कोई गैरयहूदी व्यक्ति यहूदी मत स्वीकार करता था तो खतना के साथ उसका बपतिस्मा भी किया जाता था। यह बपतिस्मा एक शुद्धीकरण संस्कार के रूप में दिया जाता था। इसके अलावा उन दिनों में कई कट्टर धार्मिक संगठन भी बपतिस्मा दिया करते थे। जैसे, यहूदा-मरूभूमि के कुमरान प्रदेश में रहने वाले एसेनी लोग ऐसे लोगों को बपतिस्मा दिया करते थे जो उनके समाज में शामिल होना चाहते थे। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यह कहकर बपतिस्मा दिया करता

था कि अपने जीवन को एक नया आयाम और नई दिशा दो। (लूका 3:7-14) लेकिन प्रेरित पौलुस के अनुसार मसीही बपतिस्मा यीशु मसीह के प्रायश्चित्तकारी मृत्यु में विश्वास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त व्यक्ति का मसीह के साथ सहभागिता का प्रतीक है। पौलुस का यह कहना है कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया।

यह कैसे होगा पास्टर साहब? क्या बपतिस्मा के द्वारा ही हमारी सहभागिता यीशु मसीह के साथ होती है? कल रात को जब मैने यीशु को अपने जीवन में निमंत्रित किया तब ही मैंने उद्धार पा लिया था। क्या ऊद्धार पाने के लिए बपतिस्मा जैसे किसी संस्कार की आवश्यकता है?

नहीं, परमेश्वर के उद्धार को पाने के लिए किसी प्रकार के मानवीय कर्म की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए बपतिस्मा के द्वारा ऊद्धार जैसी धारणा को यूं ही मान लेना मुश्किल है। किन्तु प्रेरितों के लिए बपतिस्मा और यीशु को स्वीकार करने कॅ निर्णय में अंतर करना असंभव था। उद्धार पाना और बपतिस्मा लेना दोनों घटनाओं में अधिक समय का अंतर नहीं होता था। जब एक व्यक्ति यीशु के साथ सहभागी होने का निर्णय लेता था तब वह बिना देरी किये बपतिस्मा के द्वारा यह घोषणा करता था कि अब से मैं यीशु का हो गया हूँ। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने प्रचार किया ''सो जिन्होने उसका वचन ग्रहण किया उन्होनें बपतिस्मा लिया और उसी दिन 3000 लोगों के लगभग उनमें मिल गये।'' (प्रेरितों 2:41)। यहाँ 'उसी दिन' शब्द पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होने उसी दिन बपतिस्मा लिया । बपतिस्मा लेने में सबसे अधिक तीन दिन का समय पौलुस ने लिया था। (प्रेरितों 9:9,18)। उन परिस्थितियों में यीशु के साथ सहभागी होने का निर्णय और बपतिस्मा को अलग अलग कर देखने की आवश्यकता नहीं थी। मसीह के साथ सहभागी होने के अपने निर्णय को वे बपतिस्मा के द्वारा ही प्रगट करते थे।

एक चिन्ह इतना अहम् है क्या। हमारा निर्णय बड़ा है न?

हमारा निर्णय निश्चय ही बड़ा है। लेकिन यह चिन्ह भी उतना छोटा नहीं है। एक स्त्री और पुरुष जब एक साथ रहने का निर्णय करते हैं तब वे समाज के लोगों के सामने विवाह करते हैं। सभी समाज में विवाह एक स्थापित संस्था है। यद्यपि हर समाज में विवाह में अलग अलग रीति-विधियों का पालन किया जाता है फिर भी विवाह के

प्रतीक के रूप में या तो मंगलसूत्र पहनाया जाता है या फिर अंगूठी पहनाया जाता है। कुछ नहीं तो विवाह के प्रतीक के रूप में कम से कम हाथ मिलाया जाता है। मसीह के साथ सहभागी होने का निर्णय लेने के पश्चात् वह बपतिस्मा के द्वारा अपने इस निर्णय को दृढ़ करता है।

इन सब बातों की आवश्यकता क्या है? मैंने यीशु को स्वीकार कर लिया है। क्या अब परमेश्वर की स्तुति करते हुए चैन के साथ जीना काफी नहीं है? बपतिस्मा के द्वारा, सार्वजनिक घोषणा करके क्यों परेशानी मोल ली जाये?

परेशानी...? बपतिस्मा तो संसार के सामने यह कहने का एक अवसर है कि मैने यीशु को पाया है.... मैंने उसे स्वीकार किया है। यह परेशानी की बात कैसे होगी? जिस लड़की का विवाह होने जा रहा हो क्या वह विवाह की विधि को परेशानी समझेगी?

फिर भी पास्टर सिंह, जब मैं बपतिस्मा लूंगा तब मेरे लोग सोचेंगें कि मैं ने उन्हें छोड़ दिया है।

भाई अमर, हम किसी कलीसिया की सदस्यता के लिए बपतिस्मा नहीं लेते हैं। यह एक गलत विचार है। बपतिस्मा के द्वारा हम मसीह के साथ सहभागी होते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में अपने समाज से जुड़े रहते हैं। लेकिन आराधना और संगति के लिए हम अपने समान अनुभव रखने वालों के पास जाते हैं। यह संगति हमें अपने परिवार से अलग नहीं करता है। बपतिस्मा लेने के बावजूद भी हम अपने पिता के बॅटे, बहन के भाई और पड़ोसी के पड़ोसी ही रहेंगे।

तो क्या आप यह कह रहे हैं कि बपतिस्मा और कलीसिया की सदस्यता लेने में कोई संबंध नहीं है।

ऐसी बात नहीं है। बल्कि मैं यह कह रहा हूँ कि बपतिस्मा के द्वारा मसीह में सहभागी होने वाले लोगों के समूह को कलीसिया कहा जाता है। यह कलीसिया विश्वव्यापी है। बपतिस्मा के द्वारा हम इसी विश्वव्यापी कलीसिया के सदस्य बनते हैं। यह विश्वव्यापी कलीसिया विभिन्न आचार व्यवहार और परंपराओं का पालन करने वाली स्थानीय कलीसिया से सर्वथा भिन्न है। इससे पहले भी बपतिस्मा और कलीसियाई सदस्यता में अंतर न समझने के कारण बहुत सी समस्यायें हुई हैं। कई लोग यह सोचते हैं कि बपतिस्मा एक धर्म से दूसरे धर्म में जाने का चिन्ह है। आजकल कई लोग बपतिस्मा

लेना भी जरूरी नहीं समझते हैं। यदि उन्हे यह सिखाया जाता कि बपतिस्मा उन्हे किसी धर्म विशेष से नहीं बल्कि मसीह से जोड़ती है तो वे इस प्रकार की गलतफहमी से बच जाते।

मैं कुछ भी विश्वास करूं या गवाही दँ, मेरा समाज मुझे कुछ नहीं कहेगा लेकिन यदि मैं ने बपतिस्मा लिया तो निश्चय ही वे मुझे समाज से बाहर कर देंगें।

इससे प्रगट होता है कि बपतिस्मा कितना महत्वपूर्ण है। अन्यथा जो लोग यह कहते हैं कि बपतिस्मा में कोई बड़ी बात नहीं हैं, वे किसी के बपतिस्मा लेने पर इतना बवाल क्यों मचाते हैं। इसका अर्थ तो यही हुआ न कि वे भी जानते हैं कि बपतिस्मा कितना महत्वपूर्ण है। कलीसिया का इतिहास इस बात की साक्षी है कि जिन्होने भी बपतिस्मा का पालन किया वे अन्य मसीहियों से अधिक सताये गये। 16 वीं सदी में विश्वासियों के बपतिस्मा का प्रचार करने वाली अनाबापटिस्ट कलीसिया के लोगों को कैथलिक और लूथरन कलीसिया के लोगों ने समान रूप से सताया था। परस्पर मत भिन्नता होते हुए भी अनाबापटिस्ट लोगों को सताने के लिए वे एक हो गए थे। उन्होने कई अनाबापटिस्ट विश्वासियों को कोड़े मरवाए, कईयों के उपर से रथ दौड़ाए और कितनों को जान से मरवा दिया। किन्तु ये सारे सताव बपतिस्मा की शिक्षा को समाप्त नहीं कर सके। बल्कि सताव से यह साबित हो गया कि यह उपदेश सच है।

इतनी सारी परेशानियां हैं तो फिर बपतिस्मा जैसे संस्कार की आवश्यक्ता क्या है? आखिर यह एक प्रतीक ही तो है। बपतिस्मा मे हम पानी में उतरते हैं, फिर पानी से ऊपर आते हैं। इतनी सी ही तो बात है।

सच है, यदि इतनी सी ही बात है तो इसका कोई लाभ नहीं है। लेकिन प्रेरितों के लिए बपतिस्मा एक अनुपयोगी प्रतीक नहीं था। पौलुस कहता है कि बपतिस्मा द्वारा हम मसीह के साथ सहभागी हो जाते हैं।

प्रारंभिक युग की कलीसिया एक विशेष घोषणा के साथ संसार का सामना करती है कि यीशु मसीह संसार के उद्धार के लिए आया और भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए पापों के प्रायश्चित्त के रूप में अपना बलिदान दिया। तीसरे दिन वह मृत्यु के सारे बंधनों को तोड़कर मृतकों में से जी उठा और चालीस दिन तक लोगों को दिखाई देता रहा। तत्पश्चात् उसका स्वर्गारोहण हुआ। यह ऐतिहासिक घटना ही बपतिस्मा का धर्मविज्ञान है।

रोमियों 6:3 में प्रेरित पौलुस कहता है कि हम सब जो बपतिस्मा के द्वारा मसीह यीशु के साथ एक हुए, बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में भी सहभागी हुए। पौलुस का कहना है कि बपतिस्मा में हम यीशु के साथ एक अद्‌भुत सहभागिता में जुट जाते हैं। बपतिस्मा में हम यीशु के हरेक अनुभव में शामिल हो जाते हैं। मैं महसूस करता हूँ कि यीशु ने जो कुछ किया है उसमें मैं भी शामिल था। मैं यीशु के अस्तित्व में पूर्णरूपेण स्वयं को शामिल करता हूँ। जैसे वह मरा वैसे मैं भी मरता हूँ। जैसे वह जी उठा वैसे मैं भी जी उठता हूँ।

पास्टर साहब, ये सब बातें मेरी समझ में नही आ रही हैं....।

आपकी कठिनाई मैं समझ सकता हूँ। पौलुस की इस विचार धारा पर उसकी धार्मिक पृष्ठभूमि का गहरा प्रभाव पड़ा है। चूंकि हम उस पृष्ठभूमि से परिचित नहीं हैं, इसीलिए इस सच्चाई को समझने में कठिनाई हो रही है। यहूदी जनता स्वयं को अपने पूर्वजों के अनुभव में सहभागी करती थी। भले ही उनके पूर्वज उनसे कितने ही वर्ष पहले जीवित रहे हों। आज भी जब फसह का पर्व मनाया जाता है तब वे अपने पूर्वजों के अनुभव को अपना अनुभव कहकर स्मरण करते हैं-

''....कि जब हम मिश्र में फिरौन के दास थे, तब यहोवा बलवंत हाथ से हमको मिश्र में से निकाल ले आया; और यहोवा ने हमारे ने हमारे देखते मिश्र में फिरौन और उसके सारे धराने को दुःख देने वाले बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाए। और हमको वह वहाँ से निकाल लाया। ....'' (व्यव. 6:20-23)

'हम,' 'हमें,' जैसे शब्दों पर ध्यान दो। इन शब्दों से ऐसा प्रगट होता है कि मानो इन शब्दों के दुहराने वाले भी फिरौन द्वारा सताए गये और परमेश्वर ने उन्हे बचाया।

आज भी फसह के पर्व के दौरान यहूदी लोग इसे दुहराते हैं। आज का यहूदी मिश्र को देखा भी नहीं होगा। फिर भी वह कहता है कि हम मिश्र में फिरौन के दास थे....और परमेश्वर ने हमें मिश्र से छुड़ाया। अर्थात् सदियों पूर्व जो ऐतिहासिक घटना हुई उसमें आज का यहूदी भी स्वयं को शामिल समझता है। भूतकाल और वर्तमान काल के मध्य की रेखा को वे नही देखते हैं। वह घोषणा करता है कि हजारों वर्ष पूर्व जो छुटकारे का कार्य हुआ वह उसके जीवन में हुआ है।

इस घटना का बपतिस्मा से क्या संबंध है?

मेरा कहना यह है कि इसी पृष्ठभूमि के आधार पर हम मसीह के साथ सहभागी होने के बारे में पौलुस के कथन को और स्पष्ट रूप से समझ सकतें हैं। बपतिस्मा के द्वारा हम यह अंगीकार करते हैं कि मैं मसीह के साथ एक हो गया हूं और मसीह के साथ जो कुछ हूआ है वह मेरे साथ घटित हुआ है। यद्यपि यीशु मसीह का जन्म शताब्दियों पूर्व हुआ था । फिर पौलुस घोषणा करता है कि यीशु मसीह के साथ वह भी क्रूस पर मर गया, और मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा उसने भी जीवन प्राप्त किया। यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार एक यहूदी व्यक्ति सदियों पूर्व मिश्र में हुई घटना में स्वयं को शामिल करता है।

पास्टर जी, क्या एक बार फिर से आप इस की व्याख्या करेंगें?

हाँ अवश्य ही.....। पौलुस ने स्वयं भी इसकी व्याख्या की है। रोमियों की पत्री ५ वें अध्याय के 12 वें पद में हम इस प्रकार पढते हैं कि ''.....जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसिलिए कि सबने पाप किया।''

पौलुस का तर्क है कि एक मनुष्य आदम के पाप करने के कारण सबने पाप किया। मिश्र का उदाहरण ही यहां पर भी प्रयुक्त होगा। मानवीय जन्म के द्वारा हम आदम के साथ सहभागी हो जाते हैं। आदम के जीवन में जो कुछ भी हुआ उसमें मैं भी सहभागी हूँ। आदम के पाप को मैं अपने उपर ले लेता हूँ, मानो अदन के बगीचे में मैं भी आदम के साथ था। आदम का दण्ड मेरा दण्ड बन जाता है।

''तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होने उस आदम के अपराध की नाई जो उस आने वाले का चिन्ह है, पाप न किया।'' (रोमियो 5:14) ।

''.....एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया.....।'' रोमियों 5:17 ।

इन पदों का सारांश यह है कि एक व्यक्ति के आज्ञा उलंघन के कारण सब मनुष्यों पर मृत्यु राज्य करने लगी। पौलुस का तर्क है कि एक मनुष्य जब आदम के वंश में जन्म लेने के कारण उसके पाप का भागी बन गया तब यीशु में बपतिस्मा द्वारा सहभागी होने के द्वारा वह यीशु के जीवन और अनुग्रह का भी भागी बन जाता है।

वह कैसे ?

जैसा कि मैंने कहा, यहूदी धर्मविज्ञान के अनुसार ऐसे लोग जिन्होने कर्म से कोई पाप नहीं किया; (वास्तव में ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है), वे आदम के पाप का दण्ड भोगते हैं। यदि पाप और मृत्यु एक व्यक्ति अर्थात् आदम के द्वारा इस संसार में आई तो उसी प्रकार भलाई और छुटकारा दूसरे व्यक्ति अर्थात् यीशु के द्वारा संसार को प्राप्त हुई। दूसरे शब्दों में यदि कहें तो आदम के आज्ञा उलंघन के द्वारा सब मनुष्यों पर पाप का दण्ड आया और यीशु के आज्ञापालन के कारण सारी मानवजाति भी धर्मी ठहराई जाती है। (रोमियों 5:15-19) ।

इतना तो आप जानते हीं हैं कि हम अपने भले कामों के कारण धर्मी नहीं ठहराये जाते हैं। बल्कि मसीह की धार्मिकता के कारण हम धर्मी ठहराये जाते हैं। मसीह की धार्मिकता मेरी धार्मिकता तब बनती है जब मैं मसीह के साथ एक हो जाता हूँ। मैं मसीह के साथ इस प्रकार एक बन जाता हूँ कि कोई मुझे मसीह से अलग नहीं कर सके। अब परमेश्वर जब देखता है तब उसे मैं नहीं परन्तु मसीह दिखता है।

''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। अब मैं नहीं पर मसीह मुझमें जीवित है।'' (गल.2:20) ।

जिस प्रकार आदम के आज्ञा उलंघन के समय हम अदन के बगीचे में थे उसी प्रकार हम यीशु के क्रूसीकरण के समय कलवरी के पहाड़ पर थे। पौलुस द्वारा यह कहना कि ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढाया गया हूँ.....,'' यही प्रगट करता है।

''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गये.....।'' (रोमियों 6:4)। परमेश्वर सारी मानव जाति को एक व्यक्ति अर्थात् यीशु में देखता है। मानव जाति को पाप से मुक्ति देने के लिए जो कुछ करना था वह उस व्यक्ति ने किया। यीशु ने जो कुछ मनुष्य की मुक्ति के लिए किया, उसे परमेश्वर सारी मानव जाति द्वारा किये गये कार्य के रूप में देखती है। मसीह जो कुछ था, जो कुछ उसने सहा, उन सब में बपतिस्मा के द्वारा हम सहभागी बनते हैं।

मैंने नहीं सोचा था कि बपतिस्मा का अर्थ इतना गहरा है। मैं भी बपतिस्मा लेना चाहता हूँ लोकिन अपने मित्रों और रिश्तेदारों के सामने यह बताने में मुझे संकोच हो रहा है।

ऐसा इसीलिए भी हो सकता है कि हम बपतिस्मा के महत्व को नहीं समझ पा रहें हों। वास्तव मे इसमें लज्जा की बात नहीं है। इसमें तो हमें गर्व होना चाहिए। बपतिस्मा के द्वारा तो हम बाहरी संसार में यह घोषणा करते हैं कि हम यीशु की संपत्ति हैं।

''जो कोई संसार के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।'' (मत्ती 10:32)

फिर भी पास्टर जी, यदि मैं बपतिस्तमा नहीं लूंगा तो क्या मैं स्वर्ग नहीं जा पाऊँगा?

आप बपतिस्मा को स्वर्ग जाने से कैसे जोड़ रहे हैं? हमें स्वर्ग ले जाने के लिए जो कुछ आवश्यक था वह यीशु कर चुका है। बपतिस्मा के द्वारा मैं इस बडी सच्चाई को संसार को बताता हूँ। सच में यह मेरे लिए गवाही देने का सुअवसर है। यीशु से सच्चा प्रेम करने वाला कोई भी व्यक्ति इस अवसर को खोना नहीं चाहेगा।

तब क्या आप यह कह रहें हैं कि मुझे सबके सामने बपतिस्मा लेना पड़ेगा? मैं तो सोच रहा था कि यदि बपतिस्मा लूंगा भी तो कहीं दूर जाकर लूंगा और वापस आकर इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताऊँगा।

जैसा कि हमने पहले देखा कि बपतिस्मा इस बात की सार्वजनिक घोषणा है कि मैं यीशु की संपत्ति हो गया हूं। यह घोषणा सार्वजनिक रूप से ही की जानी चाहिए । अगर किसी को इस प्रकार सार्वजनिक घोषणा करने में शर्म या हिचक महसूस होती है तो उसका बपतिस्मा नहीं लेना ही अच्छा है/

हां, हो सकता है कई देशों में बपतिस्मा जैसे धार्मिक संस्कार को कानून के द्वारा अपराध ठहराया गया हो। ऐसे देशों में बपतिस्मा उस व्यक्ति विशेष के सताव का कारण बन सकता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह भी नहीं है कि बपतिस्मा हमशा बडी भीड़ के सामने ही होना चाहिए। इथियोपिया की रानी के मंत्री का बपतिस्मा निर्जन प्रदेश में हुआ। उस समय उसके आस-पास फिलिप्पुस के अलावा कोई भी नहीं था। शर्म या हिचक के कारण बपतिस्मा नहीं लेना अच्छा नहीं है।

क्या यीशु के साथ सहभागी होने के लिए बपतिस्मा जैसा प्रतीक अनिवार्य है? जब कलीसियाओं में बपतिस्मा के विषय में इतनी मतभिन्नता है तो इस संस्कार का पालन हम इतनी कट्टरता के साथ क्यों करें?

बाईबल स्पष्ट कहती है कि यीशु के साथ सहभागी होने का प्रतीक क्या है? वह है- बपतिस्मा। जैसा कि हमने पहले भी देखा था बपतिस्मा की एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी है। और यह हमारी भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से मेल भी खाता है। ऐसी स्थिति में बाईबल में वर्णित इस प्रतीक का प्रयोग करना उचित ही दिखाई पड़ता है?

क्या इस बात का कोई प्रमाण है कि बाईबल के समय में बपतिस्मा पानी में डूबकर ही लिया जाता था?

कम से कम बाईबल पढ़ने से तो ऐसी ही संभावना नजर आती है। बाईबल के इस कथन पर यदि ध्यान दें जहां लिखा है; ''पानी से उपर से आते ही.....।'' (मरकुस 1:10) ।

जब कूश देश की रानी के मंत्री ने बपतिस्मा लिया तब भी इन्ही शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। (प्रेरि. 8:39) दूसरी शताब्दी में मृत्यु शौया में पड़े लोगों के लिए डूब का बपतिस्मा में छूट देने के निर्देश दिये गये थे - **'डिडाके'**। ऐसी एक छूट देने का अर्थ है तब तक डूब का बपतिस्मा ही लागू था।

क्या डूब के बपतिस्मा के लिए इसके अलावा और भी कोई वजह है?

पौलुस जब बपतिस्मा के प्रतीक के बारे में वर्णन करता है तब वह इस कार्य के निहितार्थ का भी वर्णन करता है। वह कहता है कि हमारा पानी में डूबना मसीह के साथ मरने का और पानी में से उपर आना मसीह के साथ जी उठने का प्रतीक है। बपतिस्मा के समय जब हम पानी में डूबते हैं तब हम घोषणा करते हैं कि अब से हम संसार के लिए पूरी रीति से मर गये हैं और मसीह के साथ एक नये युग में प्रवेश कर गये हैं। यदि एक व्यक्ति अपने बपतिस्मा में बाईबल में वर्णित इस गहराई को पाना चाहता है तब उसे बाइबल के अनुसार ही बपतिस्मा लेना होगा। ''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये।'' (रोमि. 6:4) - जैसे कथन डूब के बपतिस्मा की ओर ही इशारा करते हैं।

मुझे क्या करना होगा? मुझे लग रहा है कि बपतिस्मा लेना आवश्यक है। लेकिन यदि मेरे समाज के लोग मुझसे पूछें कि तुमने तो बचपन में बपतिस्मा लिया था तो मैं उनसे क्या कहूंगा?

अमर, बुरा मत मानना लेकिन कहे बिना भी नहीं रहा जाता कि आज बिभिन्न

कलीसियाओं में जो बपतिस्मा प्रचलित है उसे बाईबल में वर्णित बपतिस्मा नहीं कहा जा सकता। कई कलीसियाएं बपतिस्मा को कलीसियाई सदस्यता पाने का एक अनिवार्य कर्म मानते हैं। लेकिन बपतिस्मा तो वास्तव में एक व्यक्ति की घोषणा है कि वह मसीह के साथ सहभागी हो रहा है। बपतिस्मा लॅना किसी भी व्यक्ति का स्वयं का निर्णय होना चाहिए।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस का संदेश ग्रहण कर 3000 के लगभग लोगों ने बपतिस्मा लिया। इस बारे में बाईबल ऐसा कहती है।

''सो जिन्होने उसका वचन ग्रहण किया, उन्होने बपतिस्मा लिया और उसी दिन 3000 मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गये।'' (प्रेरितों 2:41)।

खोजा ने जब बपतिस्मा लेने की इच्छा व्यक्त किया तब फिलिप्पुस ने उससे कहा कि यदि तू विश्वास करता है तो हो सकता है। (प्रेरितों 8:37)।

फिर कब से बच्चों का बपतिस्मा कलीसिया में लागू किया गया?

ऐसी मान्यता है कि तीसरी शताब्दी से कलीसिया में बच्चों के बपतिस्मा का प्रारम्भ हुआ। लेकिन प्रेरितों के काल में या उसके बाद की शताब्दी में बच्चों के बपतिस्मा के संबंध में किसी प्रकार का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

लेकिन कई कलिसियाई प्रचीनों ने भी बच्चों के बपतिस्मा को मान्यता दी है। है न?

हाँ। संत अगस्तीन जैसे प्रचीनों ने बच्चों के बपतिस्मा को मान्यता दी थी। उनका तर्क था कि यदि बच्चों का बपतिस्मा नहीं किया जाये तो उनमें जो जन्मजात् पाप होता है वह बना रहेगा और यदि बच्चा बिना बपतिस्मा के मर जाय तो उसका उद्धार नहीं होगा। लेकिन जन्मजात पाप के सिद्धांत को अधिकांश सुसमाचारीय कलिसियाएं स्वीकार नहीं करती हैं। अब यदि हम मान लें कि यह सिद्धांत सही भी है तो फिर अन्य मतावलंबियों के बच्चों का क्या होगा? और फिर मसीहियों के बच्चे भी तो बपतिस्मा से पहले मर सकते हैं।

सच तो यह है कि बपतिस्मा जन्मजात पाप को धोने के लिए नहीं बल्कि मसीह के साथ सहभागी होने के लिए है।

फिर भी, बच्चों को भी परमेश्वर की आशीष पाने का एक अवसर देना चाहिए। यीशु

ने भी तो बच्चों को अपने पास बुलाकर उन्हे आशीष दी थी।

आशीष पाना और बपतिस्मा लेना दोनों अलग-अलग बातें हैं। बपतिस्मा एक व्यक्ति के भीतर हुए परिवर्तन का बाहरी प्रगटीकरण है। उसे हम आशीष पाने से कैसे जोड़ सकते हैं। यदि परमेश्वर किसी को आशीष देना चाहता है तो उसे उस व्यक्ति की सहमति लेने की आवश्यक्ता नहीं हैं। लेकिन बपतिस्मा के मामले में ऐसा नहीं है। यह एक व्यक्ति का अपना निर्णय है।

जब यीशु के पास बच्चों को लाया गया तब उसने चेलों से यह क्यों नहीं कहा कि इन्हे ले जाकर बपतिस्मा दो। यीशु के समय तो बपतिस्मा बहुत प्रचलित था।

लेकिन यहूदियों के मध्य तो बच्चों का आठवें दिन खतना करवाने की प्रथा थी?

खतना के बदले बपतिस्मा का विचार बाईबल सम्मत नहीं है। वास्तव में पौलूस खतना के स्थान पर विश्वास को स्थापित करता है। यहूदियों का विश्वास था कि खतना के द्वारा वे इब्राहीम की संतान बनते हैं। लेकिन पौलुस कहता है ''.....जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही इब्राहीम की संतान हैं। (गलातियों 3:7)। बपतिस्मा और खतना दोनों अलग-अलग हैं।

क्या मसीही जीवन के लिए बपतिस्मा लेना ही काफी है.....?

नहीं, कभी भी नहीं। बपतिस्मा पाने वाले व्यक्ति को परमेश्वर के वचन के अनुसार एक विशेष जीवनचर्या का पालन करना होता है। पौलुस का यह कहना कि यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, इसी बात की ओर इशारा करता है। यह पुराने जीवन को त्याग कर नये जीवन पद्धति को अपनाना है।

बपतिस्मा के समय जल में डूबने के द्वारा हम मसीह के साथ गाड़े जाते हैं। ''हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है।'' (रोमि. 6:6)। यह क्रूसीकरण पाप की सामर्थ और गुलामी से छुटकारा है। ''क्योंकि जो मर गया वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा।'' (रोमि 6:7) ।

यह पाप के पुराने युग से धार्मिकता के नये युग में प्रवेश करना है।

''.....तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नये मनुष्यत्व को पहन लिया है.....।'' (कुलु. 3:9,10)।

यह भी याद रखना है कि बपतिस्मा में कोई जादुई सामर्थ नहीं है। पौलुस उन इस्राएलियों का उदाहरण सामने रखता है जो विभिन्न संस्कारों का पालन करने और परमेश्वर की सुरक्षा का अनुभव करने के बावजूद जंगल में नाश हो गये।

''भाईयों, हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गये और सबने बादल में और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया....सबने एक ही आत्मिक भोजन किया.....और एक ही आत्मिक जल पिया.....परन्तु परमेश्वर उनमें के बहुतेरों से प्रसन्न नहीं हुआ.....ये बातें हमारे लिए दृष्टांत ठहरीं।'' (कुरि. 10:16)।

हम मसीह के साथ क्यों मरे?

''ताकि जैसे मसीह, पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें।'' (रोमि. 6:4-5)।

पुनरुत्थान, मृत्यु के महत्व को बढ़ाता है। पौलुस का तर्क है कि यदि हम मसीह के साथ मर गये हैं तो उसके साथ जियेंगें भी।

पौलुस कहता है कि ''.....जब तुम मसीह के साथ जिलाये गये तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो।'' (कुलु. 3:1)।

जब हम मसीह के साथ जिलाये गये तो हमें यह हक नहीं कि हम पुराने जीवन की चाल चलें। इसिलिए हमें चाहिए कि हम अपने आप को परमेश्वर के हाथ में समर्पित करें।

''ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित समझो। .....पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो। .....न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो। पर अपने आप को .....परमेश्वर को सौंपो।'' (रोमि. 6:11-13) ।

अच्छी बात है, पास्टर साहब, इतना सब समझने के बाद मैं भी बपतिस्मा द्वारा अपने विश्वास की साक्षी देना चाहता हूँ। मैं अब से पूर्ण समर्पण के साथ परमेश्वर के लिए जीना चाहता हूँ। साथ ही साथ मैं परमेश्वर के वचन का और गहराई से अध्ययन करना चाहता हूँ।

अच्छी बात है, भाई अमर। परमेश्वर आपका मार्ग दर्शन करे और आपके विश्वास को स्थिर करे ।